अनुपम जी देशज चिंतक थे

बाबा मायाराम

अनुपम जी नहीं रहे, यह खबर दिल्ली में ही मिली। 19 दिसम्बर को उनका निधन हो गया। वे पिछले एक वर्ष से कैंसर से पीड़ित थे। मैं उसके बाद तक से लगातार सोच रहा हूं कि अनुपम जी पर लिखूं तो क्या लिखूं। उनके बारे में क्यों जानना जरूरी है।

अनुपम जी को जानना जरूरी है इसलिए नहीं कि वे हमारे होशंगाबाद जिले के थे। उनका गांव टिगरिया था। इसलिए नहीं कि उनका होशंगाबाद की मिट्टी से गहरा जुड़ाव था। यहां नर्मदा की सहायक नदी तवा पर जब बांध बना था तो उससे उत्पन्न समस्य़ाओं को लेकर मिट्टी बचाओ आंदोलन चला था उसमें उनकी प्रमुख भूमिका थी। बल्कि इसलिए कि वे मौजूदा विकास पर अंगुली रख रहे थे। बता रहे थे कि आगे बढ़ने से पहले सोचो, आखिर जाना कहां है और वहां जाकर क्या हासिल होगा। वे कह रहे थे कि अपने पुरखों से संवाद करो, उनसे सीखो, जानो कि वे कैसे जीते थे।

वे राजस्थान के जैसलमेर के मरूस्थल वाले इलाके में ले जाते हैं। वहां के लोग कैसे बारिश के पानी को बचाते हैं, यह बताते हैं। ऐसे शब्दों से परिचित करा रहे थे जिन्हें हम भूलते जा रहे हैं। गांव से, वहां की भाषा

से, वहां से लोगों से, वहां के पर्यावरण से और वहां के नवाचारों से हमारा परिचय करा रहे थे।

अनुपम जी के लेखन से पता चलता है कि हमारे विशाल देश में केन्द्रीकृत विकास का माडल चलने वाला नहीं है, चल नहीं रहा है, इसके लिए वैकल्पिक माडल कई हो सकते हैं। अलग- अलग हिस्सों में रहने वाले लोग अपनी भौगोलिक परिस्थिति, संसाधनों की उपलब्धता और जरूरतों को समझते हुए जल संरक्षण कर सकते हैं।

अनुपम जी से मेरा व्यक्तिगत बहुत परिचय नहीं था। दो-तीन बार ही मिला। लेकिन उन्हें सुना, पढ़ा और गुना तो लगा कि यही काम है जिसे मैं भी करना चाहता हूं।

इंदौर में था तो मशहूर चित्रकार विष्णु चिंचालकर जिन्हें गुरूजी के नाम से जानते हैं, के घर अनुपम जी का आना जाना था। गुरूजी के बेटे और चित्रकार दिलीप चिंचालकर जी से उनकी मित्रता थी। पहली बार उन्हीं से अनुपम जी के बारे में सुना।

नर्मदा पर बनने वाले सरदार सरोवर बांध के खिलाफ जब आंदोलन उभर रहा था, तब इंदौर में बड़े बांध पर एक बैठक हुई थी उसमें अनुपम जी आए थे। वहां उन्हें सुना था। वहां उन्होंने हरित क्रांति की आलोचना की थी। इसके बाद तो लगातार ही पढ़ता रहा। कुछ समय पहले इटारसी के

पास सुखतवा में एक कार्यक्रम में मुलाकात हुई तो मैंने अपनी किताब सतपुड़ा के बाशिंदे दी, तो बोले लिखते रहिए बाबा।

अनुपम जी पर्यावरण पर शुरूआती काम करने वालों में से एक हैं। चिपको आंदोलन से भी जुड़े रहे। उनके द्वारा संपादित किताब हमारा पर्यावरण, उनके द्वारा लिखित किताब आज भी खरे हैं तालाब, राजस्थान की रजत बूंदें बहुत चर्चित रही हैं। उनसे प्रेरणा लेकर लोगों ने पानी बचाने, नदियों को पुनर्जीवित करने, तालाब बनाने, पेड़ लगाने और जंगल बचाने का काम किया है।

अनुपम जी बहुत अच्छे संपादक थे। देशज् चिंतक थे। वे हमें परंपराओं से जोड़ रहे थे। उनके संपादन में निकलने वाली पत्रिका गांधी मार्ग भी इसी की एक कड़ी थी। गांधी शांति प्रतिष्ठान के पर्यावरण कक्ष के माध्यम से वे लगातार इस दिशा में सक्रिय रहे। उनकी जैसी सरल और आत्मीय भाषा एक नदी की तरह है।

उनके पिता व कवि भवानी प्रसाद मिश्र की एक कविता की पंक्ति है जो मुझे पसंद है “जिस तरह हम बोलते हैं, उस तरह तू लिख, और इसके बाद भी हमसे बड़ा तू दिख।” अनुपम जी ने जैसा सोचा, वैसा किया और वैसा ही लिखा। कबीर के शब्दों में कहें तो उनकी कथनी-करनी एक जैसी थी। अनुपम जी नहीं हैं, लेकिन विचार हैं, वही उनकी स्मृति हैं। इन पर चलकर इस दिशा में काम किया जा सकता है।